रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग-डी.के.कॉलेज
डुमराँव बक्सर बिहार

मैथिलीशरण गुप्त

भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी॥

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥

क्षत्रिय! सुनो अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो।
निज देश को जीवन सहित तन मन और धन भेट दो॥
वैश्यो! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का।
सब धन विदेशी हर रहे हैं, पार है क्या क्लेश का॥

(भारत भारती से)

राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?
तब मैं निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करे,
तुम न रमो तो मन तुममें रमा करे॥

मैं नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया॥

पहले आँखों में थे, मानस में कूद मग्न प्रिय अब थे
छोटे वही उड़े थे, बड़े-बड़े अश्रु वे कब थे?

सखि! नील नभस्सर से उतरा
यह हंस अहा! तरता तरता।
अब तारक-मौक्तिक शेष नहीं,
निकला जिनको चरता चरता॥

घटना हो चाहे घटा, उठ नीचे से नित्य।
आती है ऊपर, सखी! हो कर चंद्रादित्य॥

वेदने! तू भी भली बनी।
पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी॥

हाँ! मेरे कुंजों का कूजन रोकर,
निराश होकर सोया।
वह चन्द्रोदय उसका उड़ा रहा है
धवल वसन-सा धोया॥

मेरे चपल यौवन-बाल!
अचल अंचल में पड़ा सो,
मचल कर मत डाल॥

सखि, निरख नदी की धारा।
ढलमल ढलमल चंचल अंचल,
झलमल झलमल तारा।

जो मेरे मानस के हास।
खिलस - सहस्रदल, सरस सुवास॥

सजनि, रोता है मेरा गान।
प्रिय तक नहीं पहुँच पाती है उसकी कोई तान।

सखि वे मुझसे कहकर जाते।

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर बिहार